यूको जयपुर मासिकी

मई 2021

यूको जयपुर मासिकी

संपादक मंडल

संरक्षण : श्री प्रदीप कुमार जैन
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

प्रेरणा : श्री बी एस गुरूंग
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

प्रेरणा : श्री एम एम दुगड़
सहायक महाप्रबंधक

संपादक : डॉ सुधीर कुमार साहु
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग

श्री गगन गुप्ता
मुख्य प्रबंधक (खुदरा ऋण केन्द्र)

श्री धर्मवीर सिंह शेखावत
मुख्य प्रबंधक (विधि)

श्री मनोज मंगल
मुख्य प्रबंधक (ऋण)

श्री पवन पुरोहित
मुख्य प्रबंधक (ऋण निगरानी)

सुश्री रितु शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्यनीति आयोजना)

श्री अरविंद कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)

सुश्री किरण मीणा
वरिष्ठ प्रबंधक (वसूली)

नितिन जैन
प्रबंधक (खुदरा ऋण केन्द्र)

टेलीफोन : 0141-2446155

ई-मेल : zojaipur.ol@ucobank.co.in

प्रकाशन तिथि : 17.04.2021

पृष्ठ परिचय

जयपुर कठपुतली कला : मुखपृष्ठ पर

संपादक मंडल एवं पृष्ठ परिचय : 2

मई माह का कार्यनिष्पादन : 3-4

मैं केवल वृक्ष नहीं : 5-6

जयपुर अंचल की शाखाएं : इस बार गांधी सर्कल, जयपुर : 7

यूको बैंक का राष्ट्रीय प्रेस सम्मेलन : एक रिपोर्ट : 8

कोरोना संकट से उबरने के लिए
यूको बैंक द्वारा किए गए उपाय : 9

बोल री कठपुतली.... तू कहाँ से आई? : 10-12

अंक : मई 2021

केवल आंतरिक वितरण हेतु।
इस पत्रिका के लेखकों के विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
पर्यावरण बचाएं – धरती बचाएं। मुद्रित प्रतियों पर निर्भरता घटाएँ।

जयपुर की कठपुतली कला

विश्व को राजस्थान की
एक अनूठी और अनुपम देन है

"कठपुतली कला"

कैसी है ये कला
और कैसे हैं इसके कलाकार
जानने के लिए पृष्ठ-9 से 12 देखें।

मई 2021 माह के दौरान खुदरा व्यवसाय में वृद्धि

कुल खुदरा व्यवसाय में वृद्धि : शीर्ष 10 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	सिरसी रोड, जयपुर	2156	60.05
2	झुंझुनू	1460	38.00
3	चिड़ावा	2842	34.25
4	एसकेएस, सीकर	1996	32.59
5	विद्या विहार, पिलानी	0150	29.46
6	सरदार शहर	2843	27.26
7	नीमराणा	3275	25.00
8	मालवीय नगर, अलवर	3235	24.06
9	बीलवा	2156	21.50
10	हिंडॉन सिटी	1460	18.00

यूको स्वर्ण ऋण : शीर्ष 10 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	एसकेएस, सीकर	1996	32.59
2	सीकर	0160	15.48
3	रेनवाल	0250	12.91
4	तिलक नगर, जयपुर	1883	11.90
5	एम क्यू, पिलानी	0018	11.05
6	कोटपुतली	0486	10.00
7	चिड़ावा	2842	9.25
8	डूण्डलोद	0616	7.70
9	विद्या विहार, पिलानी	0150	7.46
10	बगरू	0457	6.68

यूको गृह ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	सिरसी रोड, जयपुर	2156	57.50
2	झुंझुनू	1460	30.00
3	सरदार शहर	2843	25.00
4	नीमराणा	3275	25.00
5	बीलवा	1595	21.50

यूको शिक्षा ऋण : शीर्ष 5 शाखाएं : राशि लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	स्वीकृत राशि
1	विद्या विहार, पिलानी	0150	22.00
2	मालवीय नगर, अलवर	3235	7.50
3	अजीतगढ़	2561	5.00
4	दूदू	1349	4.00
5	झुंझुनू	1460	3.80

मई 2021 माह में वसूली

कुल वसूली : 154 खातों में 84.96 लाख

शीर्ष 10 शाखाएँ : राशियाँ लाख रुपयों में

क्र.	शाखा	शा. क्र.	वसूली
1	बनेठी	0629	19.97
2	हिन्डौन	2602	8.43
3	गंगापुर सिटी	2889	6.47
4	बगरू	0457	6.08
5	डीडवाना	1086	5.16
6	पिलानी एम.क्यू	0018	4.13
7	आमेर रोड	2044	3.98
8	भुसावर	0325	3.59
9	फुलेरा	1093	3.08
10	जौहरी बाजार	0011	3.00

समझौते के तहत समायोजित खाते : 11, राशि 26.25 लाख

मई 2021 माह में वैकल्पिक भुगतान माध्यम का प्रसार

डिजिटल अपनाएँ अभियान : नये एटीएम कार्ड : मई 2021

क्र.	शाखा	शा. क्र.	नए एटीएम कार्ड
1	भिवाड़ी	3326	38
2	बसवा	0725	31
3	बस्सी	3145	28
4	देवन	2719	24
5	नरैना	0323	23
6	बनेटी	0629	21
7	हिंडौन	2602	19
8	शाहपुरा	1346	18
9	मालवीय नगर, अलवर	3235	18
10	भिवाड़ी	3326	38

डिजिटल अपनाएँ अभियान : नये मोबाइल बैंकिंग : मई 2021

क्र.	शाखा	शा. क्र.	नये मोबाइल बैंकिंग
1	सीतापुरा, जयपुर	2393	148
2	एन ई आई, जयपुर	1796	146
3	मुहाना मंडी रोड, जयपुर	3234	80
4	झुंझुनू	1460	71
5	निवारू	3197	47
6	भिवाड़ी	3326	31
7	गुढ़ागोरजी	2607	28
8	मालवीय नगर, अलवर	3235	25
9	बनेटी	629	23
10	चौमू	155	20

" मैं केवल वृक्ष नहीं "

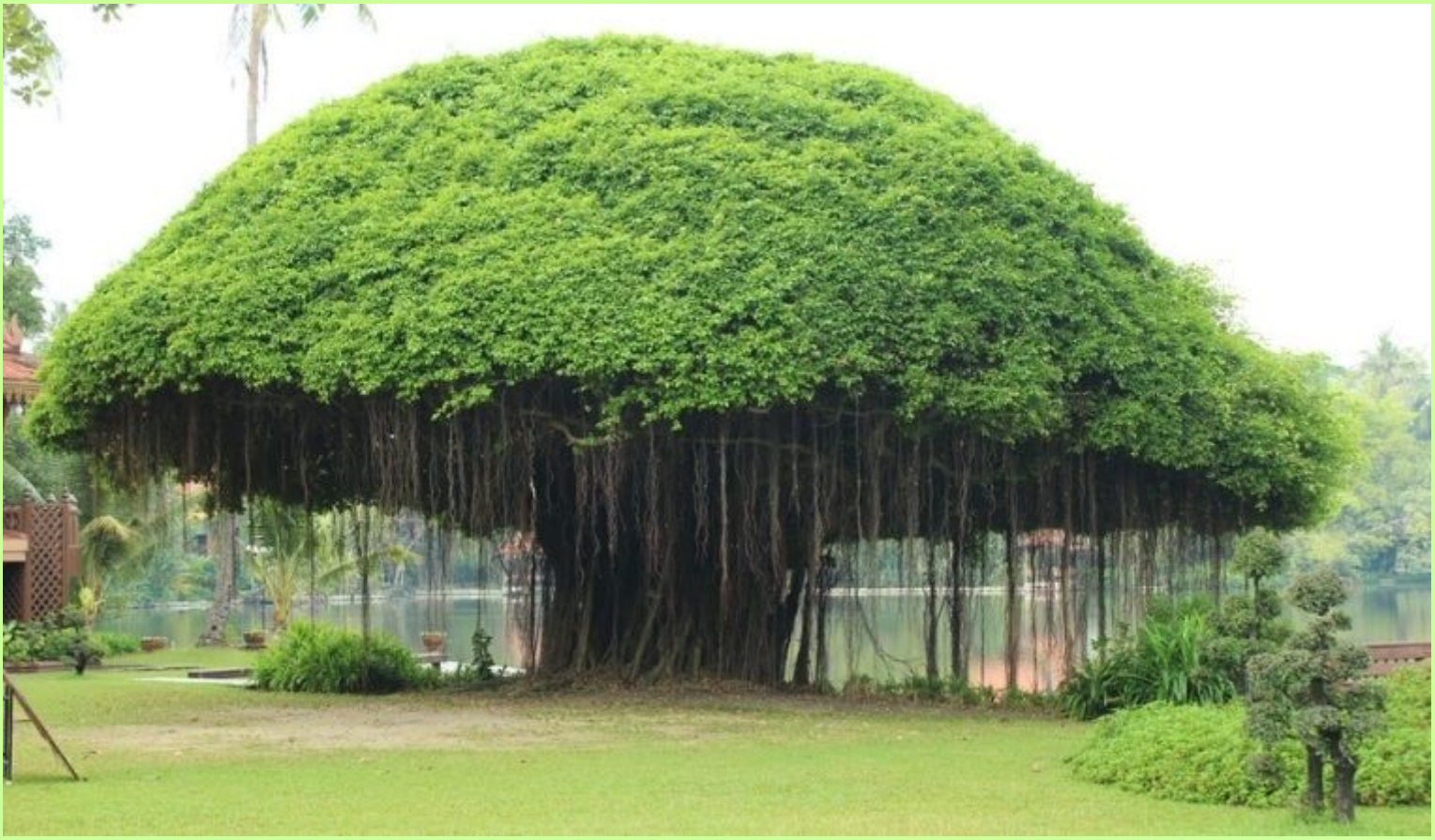

आस्था और हरियाली मानव जीवन के दो अहम पक्ष हैं। अगर कोई पूछे कि इन दोनों का आपस में क्या संबंध है तो अधिकतर – साध लेंगे।लोग चुप्पीआस्था एक बेहद व्यक्तिगत विषय है, वहीं हरियाली एक सामाजिक या सार्वजनिक विषय है। इन दोनों को एक साथ देखने की चेष्टा कम ही की गई है। लेकिन मुझे इन दोनों में एक अन्योन्नाश्रय संबंध दिखता है। जैसे दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हों। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हरियाली के बीज से ही हमारी आस्था उपजी है।

हमारी प्राचीन परम्परा से लेकर आधुनिक इतिहास तक वृक्षों के महत्त्व से भरा पड़ा है। हर कहानी में, शास्त्र-पुराण में वृक्षों का किरदार भी उतना ही अहम है जितना नायक का। पंचतंत्र के वृक्ष भी बातें करते हैं, पंडित विष्णु शर्मा ने उन्हें अपनी कहानियों के चरित्रों में शामिल किया है। लोक कथाओं और लोक गीतों में भी वृक्ष शामिल हैं।

रामायण के श्री राम को रहने के लिए "पञ्च-वटी " जँचती है, तो महाभारत के श्री कृष्ण को रास-लीला के लिए बृज के वन की जरूरत पड़ती है। बृज के वन तो इतने विशाल थे कि वृक्षों के प्रकार पर उनका नामकरण हुआ था। जैसे, वृन्दा (तुलसी) बहुल वन का नाम वृन्दावन हुआ, ताल वृक्ष की बहुलता वाले वन का नाम तालवन पड़ा, कमल की अधिकता वाला वन कुमुद-वन कहलाया। बुद्ध को भी ज्ञान प्राप्ति बोधि-वृक्ष के नीचे ही हुई।

मत्स्य-पुराण में वर्णित है "दसपुत्रसमो द्रुम:" अर्थात एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है। एक प्रसिद्ध उक्ति है कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, माता कुमाता नहीं हो सकती। सच यह भी है कि वृक्ष को यदि दस के बजाए एक ही पुत्र के बराबर मानें, तो भी पुत्र अक्सर कुपुत्र होते देखे गए हैं, लेकिन एक वृक्ष कभी कुवृक्ष होता नहीं देखा गया है। बेटा बुढ़ापे का सहारा बन ही जाए, यह जरूरी नहीं होता। अगर सहारा बन जाए, तो पिता भाग्यवान कहलाता है। लेकिन जवानी में रोपा गया पौधा बुढ़ापे में वृक्ष बनकर फल जरूर खिलाएगा, इसमें किसी को तनिक भी संदेह नहीं हो सकता।

गाँवों में वृक्ष हमारे दादा-परदादा के नाम से भी जाने जाते हैं। उन्हें शायद मालूम था कि अमर होने का एक मार्ग वृक्षारोपण भी है। गांवों में तो गोचर यानी पशुओं की भूमि और ओरण यानी भगवान की भूमि होती है, जहाँ होती है सिर्फ और सिर्फ हरियाली।आज भी व्रतों-कथाओं के अवसर पर पीपल-बरगद आदि के वृक्षों को धागा बाँधकर हमारी माताएं-बहनें प्रकृति से हमारे सम्बन्ध को और प्रगाढ़ करती हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में जब हम पर्यावरण के प्रति जुड़ाव की भावना का त्याग करते जा रहे हैं, वही पुरातन पंथी कहे जाने वाले परंपरा प्रेमी लोग हमारे हिस्से का काम अब भी कर रहे हैं। यदि आज भी इस धरती पर कहींकहीं कुछ वन बचे हुए हैं-, तो उन्हीं आदिवासी भाइयों की बदौलत, जिनके प्रकृति प्रेम को हम असभ्यता और पिछड़ापन मानते हैं। प्रकृति हम सबकी माँ है, पूजनीय है, सच्ची ईश्वरीय शक्ति उसी में निहित है और वृक्षों की पूजा ही सबसे प्राचीन सनातन धर्म है, यह हमें उनसे सीखना चाहिए।

क्या एक आस्थावान व्यक्ति वृक्ष द्रोही हो सकता है? क्या ईश्वर में सच्ची श्रद्धा रखने वाला कोई व्यक्ति किसी वृक्ष को काट

सकता है? हिंदू धर्म में तो पूजा के लिए तुलसी के पत्तों को तोड़ने से पहले भी उन्हें प्रणाम करने की प्रथा है। भगवान की मूर्ति पर चढ़ाने के लिए फूलों को तोड़ने वाले भक्त भी रात में पुष्पदान नहीं लेते, क्योंकि तब वह पौधा सो रहा होता है, फूल तोड़ने से उसकी नींद टूट जाती है। स्पष्ट है, कि वृक्षों को काटने और वनों से आच्छादित धरती को बंजर बनाने वाले आस्थावान, धार्मिक या आस्तिक कदापि नहीं हो सकते। वे मानवता की दृष्टि से ही नहीं, धर्म की दृष्टि से भी अपराधी हैं।

वैज्ञानिक तौर पर भी देखें तो हमारी ऊर्जा के एक मात्र स्रोत सूर्य से प्रकाश ऊर्जा खाद्य पदार्थों के रूप में हम तक वृक्षों के माध्यम से ही पहुंचती है। आहार श्रृंखला में पहली और सबसे अहम कड़ी वृक्ष ही तो हैं। शाकाहार इस धरती का प्रमुख और सबसे अच्छा आहार है। फिर भी, जो मांसाहार के पक्षधर हैं, उन्हें भी मानना ही पड़ेगा, कि वृक्ष और पौधे न होते तो उन्हें भी भूखा ही रहना पड़ता। धरती पर जो भी जीवित है, चाहे वह प्राणी हो या पादप - जल, मिट्टी वायु और प्रकाश के कारण ही अस्तित्व में है। इन सभी तत्वों को जोड़ने, सम्हालने, संरक्षित करने और अन्य प्राणियों के उपयोग लायक बनाने का काम वन या वृक्ष ही करते हैं।

मगर आधुनिकता के रथ पर सवार मानव ये भूल रहा है कि अगर वृक्ष नहीं तो कुछ भी नहीं। जंगलों से गायब होते वृक्ष या फिर गोचर-ओरण भूमि पर होता अतिक्रमण आखिर मानवता पर अतिक्रमण ही तो है! आधुनिकता और विकास के नाम पर वृक्षों को काटकर हम उन बच्चों का भविष्य छीन रहे हैं जो हमारे पूर्वजों की विरासत के रूप में हमें मिला है। असल में पूर्वजों से अमूल्य भेंट के रूप में प्राप्त वन और वृक्ष इस धरती पर हमारी सबसे बहुमूल्य संपत्ति हैं। हमारी नादानी के कारण कल अगर ये गायब हो गए, तो न पर्यावरण बचेगा, न ये धरती जीवन के अनुकूल रह जाएगी। प्रकृति की चेतावनी हमें लगातार मिल रही है। उन्हें हम पहचान भी रहे हैं। फिर भी हम सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। होना तो यह चाहिए था कि हम पूर्वजों की इस संपत्ति में अपनी मेहनत से वृद्धि करके अपनी भावी पीढ़ी को सौंप जाते। लेकिन हम इनकी अंधाधुंध कटाई या तो खुद कर रहे हैं या होने दे रहे हैं। वृक्षों की कटाई से बने उत्पादों को अगर हम इस्तेमाल कर रहे हैं तो हम भी उतने ही दोषी हैं जितनी सीधे-सीधे उनको काटने वाले लोग दोषी हैं। यहाँ तक, कि यदि हम आज से वृक्षों को काटकर बनाए गए उत्पादों का खुद उपभोग बंद कर देते हैं, लेकिन दूसरों को ऐसा करते देखकर मूक दर्शक बने रहते हैं, तो भी हम वृक्षों और वनों की हत्या के अपराध में भागीदार हैं, ऐसा मानना चाहिए। क्योंकि अब पानी सर से ऊपर निकल गया है।

अब हम सबके लिए वृक्षों और वनों के पक्ष में मुखर होना और उनकी संख्या और क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए अपना योगदान देना जरूरी हो गया है। हमें इस काम को एक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करना चाहिए और इसे निभाना भी चाहिए।

वृक्षारोपण को एक सामाजिक महोत्सव बनाना होगा और इसकी शुरुआत हमें अपने घर से करनी होगी। सामाजिक-वानिकी जैसे कार्यक्रम सरकारों को चलाने होंगे, किन्तु सिर्फ सरकारों और संस्थाओं के किए यह काम होगा नहीं, अगर हम अपने घर से शुरुआत नहीं करेंगे। घर में किसी की सालगिरह हो या पुण्यतिथि, हमें उनकी याद में कुछ वृक्ष लगाने चाहिए। दफ्तर में किसी का जन्मदिवस मनाना हो या कोई अन्य आयोजन, भेंट में पौधा देने की परंपरा डालिए। यह जरूर एक छोटी शुरुआत होगी, लेकिन इस रामसेतु में गिलहरियों का योगदान भी अहम होगा।

एक छोटी सी कविता के माध्यम से इस चर्चा का समापन करना चाहूँगा :

मैं, वृक्ष हूँ

मैं,
आशियाँ हूँ उस नील-गगन के खग का,
भीगते मुसाफिर के सर पर छत सा।
मूक-पशु के लिए गर्मी से राहत हूँ,
आम तोड़ने की जिद करते बच्चे के हक-सा।।
हाँ, मैं वृक्ष हूँ।
किसी बुजुर्ग की मैं निशानी हूँ,
प्रेमिका का नाम लिखती जवानी हूँ।
किसी संत-सा तटस्थ खड़ा,
आदि से अन्त की कहानी हूँ।।
हाँ, मैं वृक्ष हूँ।
मगर,
"केवल" वृक्ष नहीं,
तुम्हारी धरती माँ की कोख का पानी हूँ।।

*****

अभिमन्यु सिंह
सहायक प्रबंधक
एमआई रोड शाखा
जयपुर

जयपुर अंचल की शाखाएँ : इस बार जयपुर की गांधी सर्कल (1385) शाखा

जयपुर शहर में बैंक की कुल 26 शाखाओं से एक गांधी सर्कल शाखा लक्ष्मी कॉलोनी में स्थित है। पहले यह शाखा गांधी सर्कल के पास हुआ करती थी, लेकिन बाद में शाखा परिसर को लक्ष्मी कॉलोनी में स्थानांतरित कर दिया गया। यह टोंक रोड पर लाल कोठी क्षेत्र में स्थित है, जो जयपुर का सबसे व्यस्त और प्रमुख व्यासायिक क्षेत्र है। गांधी सर्कल, जयपुर शाखा के बारे में प्रमुख जानकारियां इस प्रकार हैं :-

(राशियां करोड़ रुपयों में)

कारोबार के क्षेत्र	31.03.2021 के कारोबारी लक्ष्य	31.03.2021 को स्थिति
कुल व्यवसाय	130.63	134.85
कुल जमा	99.61	101.18
कुल अग्रिम	31.02	33.66
रिटेल ऋण	18.83	19.89
एमएसएमई ऋण	8.62	11.18
कृषि क्षेत्र ऋण	1.91	2.20
प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र ऋण	15.87	18.17

इनमें से

बचत एवं आवर्ती जमा खाते	संख्या : 4637	जमा राशि : 19.43 करोड़
सावधि जमा खाते	संख्या : 1972	जमा राशि : 78.38 करोड़
चालू जमा खाते	संख्या : 197	जमा राशि : 1.76 करोड़
ऋण खाते	संख्या : 214	शेष राशि : 22.85 करोड़
नकद साख (सीसी) खाते	संख्या : 64	शेष राशि : 5.56 करोड़

शाखा में 1 मुख्य प्रबंधक, 1 सहायक प्रबंधक, 1 परिवीक्षाधीन अधिकारी, 2 खिड़की परिचालक, 1 प्रधान रोकड़िया, 1 विशेष सहायक और 1 दफ्तरी सहित कुल 8 कार्मिक कार्यरत हैं। शाखा का प्रति कर्मचारी व्यवसाय 16.86 करोड़ है। हम इस पत्रिका के माध्यम से शाखा के सभी सदस्यों की ओर से अपने सम्माननीय ग्राहकों के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

राजबीर सिंह
मुख्य प्रबंधक
शाखा प्रमुख
गांधी सर्कल, जयपुर

कोरोना संकट से उबरने के लिए यूको बैंक द्वारा किए गए उपायों के संबंध में बैंक के प्रबंध निदेशक श्री अतुल कुमार गोयल का राष्ट्रीय प्रेस सम्मेलन

सचित्र रिपोर्ट

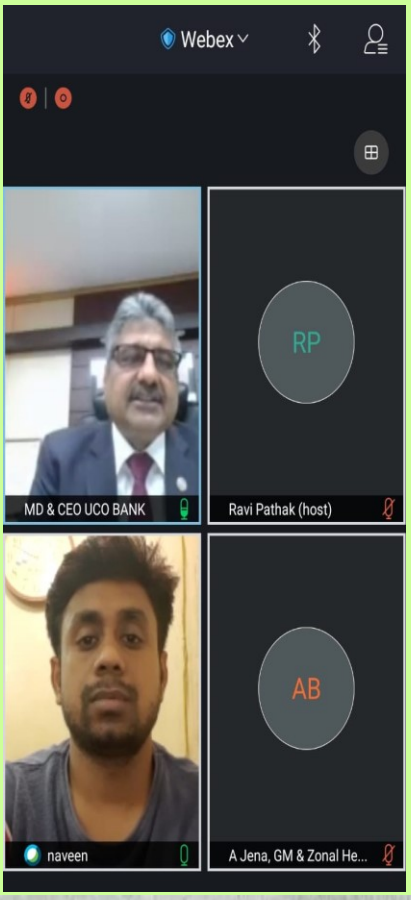

यूको बैंक से ग्राहकों को 77.90 करोड़ की राहत

जयपुर| कोरोना संक्रमण के कारण मुश्किल में फंसे कर्जदारों को यूको बैंक ने दो जून तक तहत रिजोल्यूशन फ्रेमवर्क 2.0 के तहत उधारकर्ता गारंटी इमरजेंसी क्रेडिट लाइन (जीईसीएल) के तहत 1578 खातों में 77.90 करोड़ रुपए की राहत दी है। बैंक के एमडी अतुल कुमार गोयल ने कहा कि कोरोना महामारी के संकट के कारण दबाव में आए ऋण खातों के कर्जदारों से संपर्क किया जा रहा है, ताकि ऋण खातों में रिजोल्यूशन फ्रेमवर्क 2.0 के तहत सहायता पहुंचाई जा सके। कर्जदार जी ईसीएल के तहत 30 सितंबर तक आवेदन कर सकते हैं। बैंक तरल ऑक्सीजन और सिलिंडर बनाने तथा ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए यूको संजीवनी योजना के तहत 2 करोड़ तक का ऋण दे रहा है। वहीं, कोविड संक्रमित को इलाज के लिए 5 लाख रुपए तक का ऋण दिया जा रहा है। टीका लगवा चुके ग्राहकों 999 दिन की सावधि जमा पर 5.30 फीसदी ब्याज दिया जा रहा है। बैंक ने चैनल पार्टनर के साथ खास बीमा योजनाएं शुरू की हैं। कोविड से मरने वाले कर्मचारियों के परिवारों को बैंक ने आर्थिक सहायता के तौर पर 20 लाख रुपए देने की घोषणा की है।

समाचार पत्र दैनिक भास्कर के जयपुर संस्करण में प्रकाशित समाचार

यूको बैंक ने शुरू की चार नई ऋण योजनाएं

जयपुर. यूको बैंक के एमडी अतुल कुमार गोयल ने कहा कि कोविड-19 की दूसरी लहर से मुकाबला करने और उबरने के लिए सरकार एवं आरबीआइ द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण दबाव में आए ऋण खातों के उधारकर्ताओं से संपर्ककिया जा रहा है, ताकि 5 मई 2021 को जारी आरबीआइ के दिशानिर्देश के अनुसार उनके ऋण खातों में रिजोल्यूशन फ्रेमवर्क 2.0 के तहत सहायता पहुंचाई जा सके। इसके तहत 2 जून तक ही बैंक 77.90 करोड़ रुपए के 1578 खातों में राहत दे चुका है। साथ ही पात्र उधारकर्ता गारंटीड इमरजेंसी क्रेडिट लाइन में 30 सितंबर 2021 तक आवेदन कर सकते हैं। बैंक ने हेल्थकेयर क्षेत्र की आकस्मिक आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए 4 नई ऋण योजनाएं शुरू की हैं। ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए यूको संजीवनी के तहत 2 करोड़ तक का ऋण दिया जा रहा है।

समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका के जयपुर संस्करण में प्रकाशित समाचार

कोरोना संकट से उबरने के लिए यूको बैंक द्वारा किए गए उपाय

यूको बैंक के कोलकाता स्थित प्रधान कार्यालय द्वारा 7 जून 2021 को आयोजित ऑनलाइन राष्ट्रीय प्रेस सम्मेलन में बैंक के एमडी श्री अतुल कुमार गोयल ने कहा कि कोविड-19 की दूसरी लहर से मुकाबला करने और उबरने के लिए सरकार एवं आरबीआई द्वारा अनेक कदम उठाए गए हैं। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के संकट के कारण दबाव में आए ऋण खातों के उधारकर्ताओं से संपर्क किया जा रहा है ताकि 5 मई 2021 को जारी आरबीआई के दिशानिर्देश के अनुसार उनके ऋण खातों में रिजोल्यूशन फ्रेमवर्क 2.0 के तहत सहायता पहुंचाई जा सके। इसके तहत 2 जून तक ही बैंक 77.90 करोड़ रुपयों के 1578 खातों में राहत दे चुका है, जिसमें व्यक्ति और छोटे कारोबारी भी शामिल हैं। साथ ही, पात्र उधारकर्ता गारंटीड इमरजेंसी क्रेडिट लाइन (जीईसीएल) के तहत 30 सितंबर 2021 तक आवेदन कर सकते हैं।

यही नहीं, बैंक ने हेल्थकेयर क्षेत्र की आकस्मिक आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए 4 नई ऋण योजनाएं शुरू की हैं। तरल ऑक्सीजन और ऑक्सीजन सिलिंडर बनाने, ऑक्सीजन प्लांट लगाने के लिए यूको संजीवनी के तहत 2 करोड़ तक का ऋण दिया जा रहा है। जीईसीएल 4.0 संजीवनी के तहत भी ऑक्सीजन उत्पादन प्लांट लगाने के लिए 2 करोड़ तक का ऋण देने का प्रावधान किया गया है। हेल्थकेयर संरचना बनाने के लिए यूको आरोग्यम के तहत अस्पतालों को 100 करोड़ तक का ऋण दिया जा रहा है। कोविड-19 से संक्रमित व्यक्ति को इलाज के लिए अधिकतम 5 लाख तक का ऋण यूको कवच के तहत दिया जा रहा है।

साथ ही, बैंक कोविड-19 के टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए भी लोगों को प्रोत्साहित कर रहा है। जो टीका लगवा चुके हैं, उनके लिए 5.30 प्रतिशत की बढ़ी हुई ब्याज दर पर 999 दिनों की सावधि जमा योजना "यूको वैक्सी -999" शुरू की गई है। इसके लिए लोगों को केवल एक घोषणा पत्र लिखकर देना होगा कि वे टीका लगवा चुके हैं।

बैंक ने अपने चैनल पार्टनर के साथ कुछ खास बीमा योजनाएं भी शुरू की हैं, जिनमें कोरोना कवच एवं कोरोना रक्षक, ग्रुप केयर 360, स्टार ग्रुप हेल्थ इन्स्योरेंस (गोल्ड), यूको हेल्थ सुरक्षा और रिटेल ऋण उधारकर्ताओं के जीवन को कवर करने के लिए बनाई गई ग्रुप क्रेडिट जीवन बीमा पॉलिसी शामिल है।

अपने कर्मचारियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए भी बैंक ने कई उपाय किए हैं। बैंक ने उन कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए 20 लाख रुपयों का मुआवजा देने की घोषणा की है, जिनकी कोविड-19 के कारण मृत्यु हो गई है। बैंक ने सभी कर्मचारियों को ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर खरीदने के लिए ब्याज मुक्त मीयादी ऋण सुविधा प्रदान की है और सबको बिना ब्याज के एक माह का अग्रिम वेतन भी दिया है। बैंक कर्मचारियों द्वारा कोविड टेस्ट पर किए गए खर्च तथा परिवार के सदस्यों सहित कर्मचारियों द्वारा टीका लगवाने पर किए गए खर्च का भुगतान भी कर रहा है और कर्मचारियों को प्राथमिकता के आधार पर टीका लगवाने के लिए सरकारी अधिकारियों के साथ संपर्क भी कर रहा है। जरूरत के अनुसार दिव्यांगों एवं गर्भवती महिला कर्मचारियों को महामारी के दौरान घर से काम करने की सुविधा भी बैंक ने दी है।

जनता के प्रति कार्पोरेट दायित्वों को पूरा करते हुए यूको बैंक ने अपने प्रधान कार्यालय परिसर के आसपास के क्षेत्रों में तालाबंदी से प्रभावित गरीबों और जरूरतमंद लोगों में अनाज का वितरण किया, बड़तोला पुलिस स्टेशन (कोलकाता पुलिस) की मदद से जितेन्द्र एवेन्यू, हलशीबागान, डालिमतला आदि की झोंपड़पट्टियों में रहने वालों को खाद्य पदार्थ का वितरण किया और मनसाद्वीप एवं साउथ 24 परगना के "यास" तूफान से प्रभावित लोगों को तैयार खाना पहुँचाने के लिए बैंक ने रामकृष्णा मिशन सेवाश्रम, मनसाद्वीप को आर्थिक सहायता भी उपलब्ध कराई।

अंत में श्री गोयल ने कहा कि यूको बैंक ने कोरोना महामारी और अन्य आपदाओं से त्रस्त आम जनता और अपने ग्राहकों की सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और आगे भी हम इसी तरह देश की सेवा के लिए समर्पित रहेंगे। प्रेस वार्ता के तुरंत बाद पूरे देश की मीडिया से जुड़े पत्रकारों ने कई सवाल पूछे, जिनके जवाब देकर एमडी श्री अतुल कुमार गोयल और ईडी श्री अजय व्यास ने उनकी शंकाओं का समाधान किया।

श्री गोयल ने सभी हितधारकों सूचित किया कि यूको बैंक ने पीसीए से बाहर निकलने के लिए निर्धारित सभी मानदंड पूरे कर लिए हैं और अब किसी भी समय केन्द्रीय बैंक द्वारा इस आशय की घोषणा की जा सकती है।

*****

बोल री कठपुतली..... तू कहाँ से आई?

कठपुतली नाम से बालीवुड में 1957 और 1971 में दो फिल्में बनी हैं, जिनमें से 1957 में बनी बैजयंती माला और बलराज साहनी अभिनीत फिल्म कठपुतलियों और उनके कारीगरों की जिंदगी पर आधारित एक मार्मिक कहानी बयां करती है। हो सकता है, इतनी पुरानी फिल्म आपने न देखी हो। लेकिन, बचपन में आपने कभी न कभी, कहीं न कहीं, कठपुतली का नाच जरूर देखा होगा। अगर आपने ध्यान दिया होगा, तो कठपुतलियों की पोशाक और कलाकारों की भाषा से आपको जरूर अंदाजा हो गया होगा कि इस मंडली का नाता राजस्थान से है।

जयपुर कठपुतलियों का एक परंपरागत केन्द्र है। जयपुर की हस्तकला का प्रमुख उत्पाद में कठपुतलियां ही हैं। यहां बड़े पैमाने पर कठपुतलियों का निर्माण किया जाता हैं। कठपुतली कारीगर पहले इन्हें लकड़ी और कपड़े से मनचाहा आकार देते हैं और फिर इन्हें ठेठ राजस्थानी परिधान से सजाया जाता है। कठपुतलियों को डोरियों से नचाकर मनोरंजन करने की कला का प्रदर्शन यहाँ सदियों से होता चला आ रहा है।

लेकिन कठपुतली कला केवल राजस्थान तक ही सीमित नहीं है। किसी न किसी रूप में यह कला भारत के अनेक राज्यों में प्रदर्शित की जाती है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा और केरल में खूबसूरती से रंगी गई कठपुतलियां काफी लोकप्रिय हैं। केरल के 'तोलपवकूथु' और आंध्र प्रदेश के 'थोलु बोमलता' में ज्यादातर पौराणिक कथाएं ही दर्शाई जाती हैं, जबकि कर्नाटक के 'तोगलु गोम्बे अट्टा' में धार्मिक विषय और चरित्र भी शामिल किए जाते हैं। उत्तर प्रदेश में इस कला का खूब प्रचलन रहा है। कई लोगों का मानना है कि सबसे पहले कठपुतलियों का इस्तेमाल यहीं शुरू हुआ था। यहां इनका इस्तेमाल प्राचीनकाल के राजा महाराजाओं की कथाओं, धार्मिक, पौराणिक व्याख्यानों और राजनीतिक व्यंग्यों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था। ओडिशा का 'साखी कुंदेई', असम का 'पुतला नाच', महाराष्ट्र का 'मालासूत्री बहुली' और कर्नाटक की 'गोम्बेयेट्टा' धागे से नचाई जाने वाली कठपुतलियों के ही रूप हैं। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि कठपुतली कला की शुरुआत राजस्थान से ही हुई है, या कहीं और से। फिर भी, देश भर में सबसे अधिक संख्या में राजस्थानी कलाकारों ने ही इस कला को अपनी आजीविका बनाकर इसे अब तक जिंदा रखा है। राजस्थान के कठपुतली कलाकार पूरे देश में फैले हुए हैं। दिल्ली में शादीपुर के पास कठपुतली कॉलोनी नाम की एक बड़ी बस्ती है, जो राजस्थान के कलाकारों ने ही बसाई है। ऐसी बस्तियाँ देश के और भी अनेक राज्यों में हो सक्ती हैं। इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि डेढ़ हजार वर्षों के इसके इतिहास में देश के विभिन्न राज्यों में कुछ लोगों ने राजस्थान के इन प्रवासी कलाकारों से प्रभावित होकर यह कला सीखी होगी और इसे अपनी परंपरा का अंग बना लिया होगा।

तो लीजिए, अब कठपुतली नाचने के लिए तैयार है, बशर्ते आपको इसे नचाना आता है!

लो, शुरू हो गया कठपुतलियों का नाटक!

बहरहाल, राजस्थानी शैली की एक अनूठी लोक कला के रूप में कठपुतली कला भारत और पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है। कठपुतली राजस्थानी भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। कठ का अर्थ होता है लकड़ी तथा पुतली का अर्थ होता है गुड़िया। कठपुतली मतलब पूरी तरह लकड़ी से बनी हुई गुड़िया, जिसमें सूती कपड़ा और धातु के तार भी काम में आते हैं। कठपुतलियों को तार के माध्यम से उंगलियों पर नचाया जाता है। खाट के माध्यम से एक मंच तैयार किया जाता है, जिस पर तख्त लगाया जाता है। कठपुतली को डोरी के जरिये बांधा जाता है, जो ऊपर से गुजरती है और उसका एक छोर कठपुतली कलाकारों के हाथ में होता है। कठपुतली नाच की शुरुआत ढोलक की थाप से होती है और आमतौर पर महिला मंडली की ओर से कथा के माध्यम से इसमें संगत की जाती है। यूं तो कठपुतली नाच विविध विषयों पर आधारित होता है, लेकिन राजस्थान में नागौर के अमरसिंह राठौर का संवाद सबसे ज्यादा लोकप्रिय है।

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनी की अष्टाध्यायी में नटसूत्र में पुतला नाटक का उल्लेख मिलता है। माना जाता है कि कठपुतली लोक कला के मौजूदा रूप का इतिहास लगभग 1500 साल पुराना है। यह लोक कला राजस्थान के नागौर तथा मारवाड़ जिले के भट आदिवासी जाति के लोगों का पारंपरिक व्यवसाय है। राजस्थान के गांवों में कोई भी मेला, धार्मिक त्योहार या सामाजिक मेलजोल कठपुतली नाच के बिना अधूरा है। राजस्थान में कठपुतली नाच न केवल मनोरंजन का स्रोत है, बल्कि इस लोक कला के जरिये नैतिक और सामाजिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी होता है तथा सामाजिक मुद्दों और कुरीतियों को उजागर किया जाता है। कठपुतली का निर्माण सबसे ज्यादा उदयपुर, चित्तौडगढ़ और जयपुर के कठपुतली नगर में ही किया जाता है। कठपुतली नाटकों का मंचन अधिकतर राजस्थान की नट अथवा भाट जाति द्वारा ही किया जाता है। इन्हीं कारणों से कठपुतली का नाम लेते ही सबसे पहले जेहन में राजस्थान का ही नाम आता है। कठपुतली कला के विकास के लिए राजस्थान में भारतीय लोक कला मण्डल नामक संस्था 1952 से काम कर रही है, जिसका मुख्यालय उदयपुर में है। इस संस्था की स्थापना देवीलाल सांभर ने की थी। जयपुर शहर में जवाहर लाल नेहरू मार्ग की तीन मूर्ति चौराहे पर स्थित सेठ आनंदी लाल पोद्दार मूक बधिर विद्यालय के परिसर में गुड़ियों और कठपुतलियों का एक संग्रहालय बनाया गया है, जिसे गुड़ियाघर के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण भगवानी बाई सेखसरिया चैरिटी ट्रस्ट के द्वारा कराया गया है।

कठपुतली कलाकारों के हाल

देश में सबसे ज्यादा कठपुतली कलाकार राजस्थान में ही हैं। जयपुर में कलाकार कॉलोनी, जगतपुरा और कठपुतली नगर में इन कलाकारों की बस्ती है, जिनमें लगभग 5 हजार से अधिक कलाकार पुश्तों से यह काम कर रहे हैं। जयपुर आने वाले पर्यटक कठपुतलियां खरीदने में दिलचस्पी भी दिखाते हैं। लेकिन इन कलाकारों को बहुत ही मामूली कीमत या मेहनताना मिल पाता है, जिससे इनका घर चलना तो दूर, इन्हें अक्सर दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं हो पाता। मजबूरन पेट पालने के लिए ये लोग यह काम छोड़कर अब दूसरे रोजगारों की तरफ मुड़ रहे हैं। एक कठपुतली के जोड़े की लागत लगभग 45 रुपये आती है। जबकि इनके लिए कोई भी 50 रुपए से अधिक कीमत नहीं देता। इस तरह कठपुतली कलाकार को प्रति जोड़ा सिर्फ 5 रुपए बचते हैं। एक परिवार एक दिन में लगभग 20 जोड़े तैयार कर पाता है। इस तरह इनकी रोजाना की कमाई 100 से ऊपर नहीं जाती। ऊपर से कोरोना की तालाबंदी ने इन परिवारों की कमर तोड़ दी है। ये कलाकार तेजी से इस कला को छोड़कर मेहनत-मजदूरी और दूसरे छोटे-मोटे रोजगार की तरफ मुड़ रहे हैं। कुछ कलाकारों ने प्रधानमंत्री मोदी से अपील की है कि इस कला को संजोए रखने के लिए कला और कलाकारों को बढ़ावा दिया जाए। पहले जहां सरकार की ओर से इन कलाकारों को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, नशा मुक्ति, पल्स पोलियो जैसे अभियान के प्रचार-प्रसार का जिम्मा मिलता था। वहीं अब सरकारें भी इन कलाओं से मुंह मोड़ती नजर आती हैं। इन कलाकारों का कहना है कि डिजिटल क्रांति ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है। अब सरकारें भी सोशल मीडिया, फ्लैक्स-होर्डिंग्स और अन्य साधनों से योजनाओं का प्रचार कर लेती हैं और कठपुतली कलाकार पेट पर कांठ बांधकर राह ताकते रह जाते हैं। रोजी-रोटी का यह कलात्मक जरिया भी अब अपने आखिरी दौर में है। अब ये कलाकार खूद अपने बच्चों को कठपुतलियों के साये से दूर करने लगे है।

आप जयपुर कई बार घूम चुके होंगे, लेकिन कठपुतली नगर नहीं गए होंगे। किसी ने आपको ही बताया नहीं होगा कि यहां एक कठपुतली नगर भी है। क्योंकि यह कोई घूमने या देखने लायक सुंदर स्थान नहीं है। यह जयपुर शहर के बीचोंबीच लाल कोठी क्षेत्र में एक 70 साल पुरानी झोंपड़पट्टी है, जहां कठपुतली कलाकार अत्यंत बदहाली में अपनी सांसें गिन रहे हैं। आप जब अगली बार जयपुर आएं, तो यहां से कठपुतलियां जरूर खरीदें। आपके होते हुए इतनी अनूठी, आकर्षक और प्राणवान कला कैसे मर सकती है, जिससे केवल इस बस्ती के लगभग 5000 लोगों का भविष्य जुड़ा हुआ है।

*****

31 मई 2021 को सेवानिवृत्त साथी

श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता	42794	मुख्य प्रबंधक	अग्रणी जिला प्रबंधक (एलडीएम), जयपुर
श्री के सी बालाजी	32622	एसडब्लूओ बी	एमआई रोड, जयपुर